thearyasamaj.org

आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425 सृष्टि संवत् 1960853115
डाक पंजीकरण संख्या : P/RTK/10/2013-15 विक्रम संवत् 2071
दयानन्दाब्द 191

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

॥ ओ३म् ॥

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

दूरभाष : 01262-216222 सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर

वर्ष : 11 अंक : 37 रोहतक, 28 फरवरी, 2015 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

धर्म, मत-मतान्तर और भूख

❑ मनमोहन कुमार आर्य

धर्म और भूख में क्या परस्पर कोई सम्बन्ध है? हां, अवश्य है, कम से कम भारत में तो रहा है और अब भी है, ऐसा स्पष्ट प्रतीत होता है। धर्म दो प्रकार के हैं एक तो वास्तविक, यथार्थ या सत्य धर्म है जो संसार के सभी लोगों के लिए एक समान है, इसलिए वह सबका एक ही है। सभी शुभ गुणों को धारण करना ही मनुष्य-धर्म है। यह शुभ गुण कौन-कौन से हो सकते हैं? विचार करने पर ज्ञात होता है कि ईश्वर को जानना, उसके सत्य स्वरूप का चिन्तन, उसका गुणगान व उससे सहायता की मांग करना, पर्यावरण को शुद्ध रखाना व उसके लिए यज्ञ-अग्निहोत्र आदि करना, जीवित माता-पिता-आचार्यों का सेवा-सत्कार-श्राद्ध-तर्पण कर उन्हें प्रसन्न व सन्तुष्ट रखना, सत्य बोलना, दूसरों का हित करना, कृपण, वृद्ध, असहायों व पीड़ितों की सेवा, परोपकार करना, अविद्या का नाश, विद्या की वृद्धि, सबको आदर देना व करना, क्रोध न करना, असत्य न बोलना, स्वार्थ से ऊपर उठकर सबके हित में अपना हित समझना, दूसरों की उन्नति में बाधक न बनकर साधक बनना व सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना, अपनी शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति करना, देश हित के लिए कार्य करना आदि शुभ-गुण मनुष्य धर्म कहे जा सकते हैं।

मनमोहन कुमार आर्य

इस सत्य धर्म से इतर मत-मतान्तर पन्थ-सम्प्रदाय-रिलीजन-मजहब-गुरुडम आदि हैं जो स्वयं को भी धर्म नाम से प्रचारित करते हैं। इन मतों व सम्प्रदायों की स्थापना व आविर्भाव किसी एक ऐतिहासिक पुरुष से देश-काल-परिस्थिति के अनुसार हुआ था जब सर्वत्र अज्ञान व अविद्या छाई हुई थी, समाज में अज्ञान, अन्याय व शोषण आदि विद्यमान था। देश व काल के अनुसार ही इनकी मान्यतायें व सिद्धान्त हैं जो अच्छे भी हैं व कुछ आज के आधुनिक समय में अप्रासंगिक व हितकर प्रतीत नहीं होते। उनका संशोधन होना चाहिये परन्तु प्रायः सभी मतों में अपनी मान्यताओं, सिद्धान्तों व कर्मकाण्डों में सुधार व संशोधन किये जाने की व्यवस्था नहीं है। इसका एक कारण यह भी है कि जिन लोगों के हाथों में इनकी बागडोर है, धर्म सुधार का कार्य करने से उनके हितों को हानि होने की सम्भावना है। लगभग दो अरब पुरानी मानव सभ्यता व संस्कृति में एक हजार से दो-तीन हजार पूर्व अस्तित्व में आये मत-मतान्तर अपनी मान्यताओं आदि को शाश्वत मानते हैं, यह सबसे बड़ा आश्चर्य है। देश की स्थिति भी ऐसी है कि उसमें सबको स्वतन्त्रता का अधिकार है जिसके नाम पर लोग असत्य व अनुचित बातों पर टीका टिप्पणी करने से बचा करते हैं। इनमें से अधिकांश मतों का यदि इतिहास देखें तो इन्होंने अपने प्रचार व प्रसार के लिए छल-कपट-झूठ-अविद्या-दम्भ-लोभ-सेवा-हिंसा आदि का सहारा लिया है। मनुष्य का सबसे बड़ा निजी धर्म अपने प्राणों वा जीवन की रक्षा है। जब किसी के प्राणों पर बन आती है तो लोग धर्म-कर्म कुछ नहीं देखते। अतीत में ऐसा ही हुआ है। आज जितने भी मत-मतान्तर हैं उनमें कहीं न कहीं इन अ-धार्मिक कृत्यों का सहारा लेकर अपनी-अपनी संख्या को बढ़ाया गया है। आज महर्षि दयानन्द के प्रभाव से लोग अपने मत की प्रशंसा अधिक नहीं कर पाते हैं। अच्छाइयां व बुराइयां सभी मतों में हैं। वह अपनी कुछ अच्छाइयों का बखान कर आत्म-तुष्टि कर लेते हैं परन्तु परस्पर विवाद के विषयों पर मौन साध लते हैं।

महर्षि दयानन्द का जीवन इनसे बिलकुल विपरीत था। उन्होंने उन मुद्दों पर विचार कर समाधान ढूंढा जो सर्वाधिक विवादास्पद थे। उदाहरण के लिए, क्या मूर्तिपजा सत्य है? क्या अवतारवाद और फलित ज्योतिष सत्य है? क्या सामाजिक असमानता तथा स्त्री व शूद्रों को विद्या व अध्ययन से वंचित रखना उचित है? क्या सतीप्रथा, विधवाओं पर अत्याचार, बेमेल विवाह, जन्मना जाति व्यवस्था उचित है? उन्होंने स्त्री व पुरुषों की समानता की बात कही और कहा कि सबको मर्यादित जीवन व्यतीत करना चाहिये। उन्होंने योग, समाधि, वेदाध्ययन, साधना आदि से जो सत्य व यथार्थ उत्तर प्राप्त किये उनका मौखिक प्रचार किया और धर्म-प्रेमियों के निवेदन करने पर सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, ऋग्वेद-यजुर्वेद-संस्कृत-हिन्दी-भाष्य, संस्कार विधि, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि आदि अनेक ग्रन्थ भी लिखे जिनकी सहायता से सत्य धर्म का निर्धारण होता है।

आज भी इन ग्रन्थों को पढ़कर मनुष्य तर्क व युक्ति प्रमाणों से स्वधर्म को जानकर अपने जीवन के उद्देश्य को जानने के साथ उसे सिद्ध व सफल भी कर सकता है। उनकी शिक्षायें, मान्यतायें व सिद्धान्त सार्वभौमिक वा universal हैं। सत्याचार, परोपकार, सेवा, ब्रह्मचर्य का पालन, निःस्वार्थ जीवन, अंहिसा, सभी प्राणियों की रक्षा ही धर्म है तथा मांसाहार, मदिरापान, धूम्रपान, जुआं, व्यभिचार आदि से बचना चाहिये क्योंकि उनके अनुसार यह धर्म नहीं अपितु अधर्म या पाप कर्म हैं। अधिक सुख-सुविधा एवं भोग प्रधान जीवन भी इस जन्म व परजन्म में दुःखों का कारण बनता है, ऐसा उनके विचारों का अध्ययन करने से ज्ञान होता है जो कि उचित ही हैं।

भूख सभी मनुष्यों को प्रतिदिन प्रातः, दिन व सायं समय में लगती है। यदि भूखे को समुचित भोजन न मिले तो वह दुखी हो जाता है। वह भोजन के लिए प्रयास करता है। यदि उसे भोजन प्राप्ति के साधन नहीं मिलते तो वह दूसरों से सहायता मांगता है। भिक्षा मांगना भी इनमें से एक तरीका हो सकता है। यह देखा जाता है कि देशी-विदेशी मत-मतान्तर व मजहब के लोग जिनके पास प्रचुर धन व साधन होते हैं, उनमें जो अपने धर्मावलम्बी बन्धुओं की संख्या बढ़ाना चाहते हैं वह व उनके धर्म-प्रचारक ऐसे ऐसे स्थानों पर जहां निर्धनता, गरीबी व भूख हैं, पहुंच जाते हैं। लोगों को भोजन व दवा आदि बांटते हैं और उनके लिए चिकित्सालय व विद्यालय खोलते हैं और उसकी आड़ में उनका धर्म परिवर्तन कर अपने मत में सम्मिलित कर लेते हैं। भारत का विगत कुछ शताब्दियों का इतिहास ऐसी घटनाओं से भरा पड़ा है। आज इस प्रकार की घटनायें कुछ कम तो अवश्य हुईं हैं परन्तु हमें लगता है कि समाप्त नहीं हुई हैं। यह सब काम योजनाबद्ध तरीके से किये जाते हैं। इसके पीछे सुदृढ़ संगठन होते हैं। हिन्दू समाज की जन्मना-जाति-व्यवस्था व विशम सामाजिक व्यवस्थायें व समस्याये भी इसमें एक कारण होतीं हैं। कई लोग इससे तंग आकर धर्म त्याग करते आये हैं व अब भी यदा-कदा कर देते हैं। इसे मानने वाले धर्माधीशों के कानों पर जू नहीं रेंगती। ऐसे लोग अज्ञान व स्वार्थ में खोये प्रतीत होते हैं। आज भी यह स्थिति है कि देश की आधी जनसंख्या के पास दो समय के भोजन की न्यूनतम व्यवस्था नहीं है। इन 65 करोड़ से अधिक लोगों की जिंदगी व इनके दुःखों

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

तर्कहीन आस्था = असत्य निष्ठा

❑ इन्द्रजित्‌देव

द्वारिका पीठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती के 23 जून को दिए इस वक्तव्य पर विवाद उत्पन्न हो गया है कि सांई बाबा ईश्वर का अवतार नहीं था तथा 'सनातन धर्म' की मान्यतानुसार उसकी पूजा नहीं होनी चाहिए। उनका यह भी कहना है कि सांई बाबा जन्मना मुसलमान था व मांसाहारी भी था। इस बयान से रुष्ट हुए साईं बाबा के कुछ भक्तों ने विभिन्न स्थानों पर शंकराचार्य के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज कराई हैं। कुछ पत्रिकाओं व दैनिक पत्रों में इस विषय में लेख भी प्रकाशित हुए हैं।

दैनिक 'पंजाब केसरी, चंडीगढ़' (+जालंधर, पालमपुर, हिसार) के 27 जून, 2014 के सम्पादकीय पृष्ठ पर भाजपा के राज्यसभा सदस्य बलवीर पुञ्ज का एक लेख 'किसी की आस्था को तर्क-कुतर्क से दबाया नहीं जा सकता' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है जिसमें वेदमन्त्रों की गलत व्याख्या देकर 'आस्था' को महिमा मण्डित करने का अवाञ्छनीय व असंगत प्रयास किया है। उन्होंने लिखा है कि उपासना के मार्ग अलग भले ही हों किन्तु मंजिल तो एक ही है। यह फूट को बढ़ावा देने की चिरपरिचित बेतुकी मान्यता है। जब भगवान् पृथक्-पृथक् मान लिए जाते हैं तो उनके उपासकों की मंजिलें भी यत्र-तत्र होंगी ही। राम की कथित उपासना करने वालों की मंजिल अयोध्या ही होगी, क्योंकि उनका उपास्य राम अयोध्या में ही रहता है। कृष्ण को ईश मानकर उसकी उपासना करने वालों की मंजिल मथुरा है। शिव के भक्तों से पूछिए कि तुम्हारा भगवान् कहाँ रहता है तो उनका उत्तर होगा- शिवजी का निवास कैलाश पर्वत है। इसी प्रकार विष्णु का निवास क्षीरसागर में है तथा उनके भक्तों की मंजिल क्षीरसागर होगी। ब्रह्मकुमारियों से पूछिए तो वे बताएंगी कि उनका भगवान् गोलोक में वास करता है। ईसाइयों का गॉड चौथे आसमान पर रहता है तो उनका उपास्य जहाँ रहता है अर्थात् चौथे आसमान पर ही उनकी मंजिल है। मुसलमानों का उपास्य खुदा सातवें आसमान पर रहता है तो सातवें आसमान से इतर उनकी मंजिल नहीं हो सकती।

पृथक्-पृथक् भगवान् जब मानेंगे तो उपासना के मार्ग व मंजिलें भी पृथक्-पृथक् ही होंगी। बलवीर पुंज अनेक ईश्वरों की सत्ता सिद्ध करने के लिए ऋग्वेद के इस मंत्र का हवाला देते हैं—**एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति**। उनका यह प्रयास मंत्र का ठीक अर्थ न समझने-मानने के कारण है। मंत्र यह कहता है कि ईश्वर है तो एक ही परन्तु उसके अनेक कर्म व गुण हैं तथा जीवों के साथ अनेक प्रकार के सम्बन्ध हैं। वह सर्वव्यापक है, इसलिए उसे विष्णु कहा जाता है। वह कल्याणकारी है, अतः उसे शिव नाम से भी पुकारा जाता है। वह गण (=समूह) का पति अर्थात् रक्षक है। इस कारण से उसे गणपति भी कह दें तो सत्य की हानि नहीं होगी। परन्तु है तो वह एक ही। कृष्ण का मुख्य नाम कृष्ण है परन्तु उन्हें गीता में कई नामों से अभिहित किया गया है। इनमें से कुछ नाम इस प्रकार हैं—हृषिकेश, वार्ष्णेय, जनार्दन, महात्मन्, मधुसूदन, अरिसूदन, माधव, वासुदेव, अच्युत, पार्थसारथि व केशव आदि। अर्जुन के भी कई नाम गीता में आए हैं। उनमें से कुछ ये हैं—भारत, कौन्तेय, परंतप, धनंजय, पाण्डव, अनघ, सव्यसाची, कुरुप्रवीर, कुरुनन्दन, कुरुश्रेष्ठ, गुडाकेश, महाबाहो व पार्थ इत्यादि। यदि गीता में अनेक नामों से पुकारे गए कृष्ण एक ही महापुरुष थे तो वेदों में ईश्वर के लिए आए अनेक नामों को को एक ही ईश्वर के नाम क्यों नहीं स्वीकारा जाता? शिव, विष्णु, ब्रह्मा, गणपति, गणेश, सरस्वती, इन्द्र, यम व प्रजापति इत्यादि पृथक्-पृथक् ईश्वर या देवता क्यों खड़े कर लिए गए? वेदों में नाम भिन्न-भिन्न आए हैं तो एक ही ईश के कार्य भिन्न-भिन्न हैं, इसलिए आए हैं। तर्कहीनों ने ईश्वर के स्वरूप भी अनेक बना लिए हैं। एक का ईश्वर दो हाथ का है, दूसरे का चार हाथ वाला है तो तीसरे का ईश्वर आठ हाथ वाला है। एक का ईश धनुर्धारी है तो दूसरे का बांसुरीवाला है। यह स्वरूप में भिन्नता है। ईश्वर के स्वरूपों में भिन्नता हो गई तो वह ईश्वर एक कहाँ रहा? **'एकं सद् विप्राः बहुधा वदन्ति'** का सही व संगत अर्थ समझा व माना जाता तो यह भिन्नता न होती, अनेकता न होती।

तर्क का हेय व आस्था को ग्राह्य व उत्कृष्ट मानने वाले बलवीर पुंज से हमारा निवेदन है कि वेद के मन्त्र के मनचाहे अर्थ करके असत्य को बचाया नहीं जा सकता। सत्य की खोज में तर्क परम सहायक है। सत्य का दूसरा नाम धर्म है। धर्म को जानना तथा तदनुसार आचरण करना ही व्यक्ति, समाज एवं राष्ट्र के लिए हितकर है। महाभारत में व्यास जी ने लिखा है—

'धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षितः' अर्थात् धर्म के मर जाने से मनुष्य की आध्यात्मिक मृत्यु होती है तथा धर्म की रक्षा करने से ही मनुष्य की आध्यात्मिक रक्षा होती है। मनु महाराज के ये शब्द भी स्मरणीय हैं—

आर्षधर्मोपदेशं च वेदशास्त्राऽविरोधिना।
यस्तर्केणानुसंधत्ते सः धर्मं वेद नेतरः॥

मनु० 12/106

अर्थात् जो मनुष्य वेद और ऋषि-विहित धर्मोपदेश अर्थात् धर्मशास्त्र का वेदशास्त्र के अनुकूल तर्क के द्वारा अनुसन्धान करता है, वही धर्म के तत्त्व को समझ पाता है अन्य नहीं। संसार में जब भी उन्नति हुई है, तर्क व ज्ञान द्वारा ही हुई है। यूरोप का इतिहास इस बात की गवाही देता है। स्वर्ग के लिए धन लेकर पोप प्रमाण-पत्र बेचते थे जिसे इण्डलजेन्सेज कहा जाता था। जो लोग पाप करते थे, वे पोप से माफीनामा खरीदकर यह समझते थे कि वे पापमुक्त हो गए। मार्टिन लूथर (1483-1586) ने 95 युक्तियों का एक परिपत्र जारी किया व लोगों को पोपों द्वारा आस्था के नाम पर फैलाये पाखण्ड से मुक्ति दिलाई। बाइबिल में लिखा है कि धरती चपटी है व सूर्य धरती के गिर्द घूमता है। सन् 1610 में स्वतन्त्र विचारक गैलिलियो ने इसे चुनौती दी व कहा कि तर्क व विज्ञान के आधार पर सत्य यह है कि पृथिवी घूमती है व गोल है। ब्रूनो (1541-1600) का कहना था कि पृथिवी सूर्य के गिर्द घूमती है। ईसाइयों को बाइबिल के प्रति आस्था थी व उसके अनुसार यह मानते थे कि पृथिवी के गिर्द सूर्य घूमता है, न कि पृथिवी सूर्य के गिर्द घूमती है। इस विचार पर दृढ़ रहे, पोपों द्वारा ब्रूनो को कहा गया कि वह अपने विचार बदल ले परन्तु उसने ऐसा नहीं किया तो उसे जीवित जला दिया गया। इंग्लैण्ड में पादरी लैटीमार को भी सन् 1555 में जिन्दा अग्नि को भेंट कर दिया। गैलिलियो को जेल में डाल दिया गया। हाई पेशिया को बाइबिल का विरोध करने के आरोप में आग में जला दिया गया। एक और देवी जोन आफ़ आर्क के प्रचार को रोकने के लिए उसे जादूगरनी घोषित करके अग्नि में बलात् डालकर भस्मीभूत किया। आज जर्मनी में मार्टिन लूथर की एक भव्य मूर्ति लगी है व वहां उसके विचारों को आदर से ग्रहण किया जा रहा है। यूरोप व अमरीका आज वैज्ञानिक व भौतिक दृष्टि से सबसे अधिक उन्नति को प्राप्त कर चुके महाद्वीपों के रूप में सर्वमान्य बन चुके हैं। जब तक ये 'आस्था', अंधविश्वासों अथवा पाखण्डों के घेरे में रहे तब तक उन्नति का सूर्य वहां नहीं चमका था। आज स्थिति बदली हुई है। विज्ञान, सत्य, तर्क व पुरुषार्थ का सुफल मिलता ही है। पूर्वोक्त बलिदानियों के बलिदानों को वही महत्त्वहीन कहते हैं जिनको तर्क व प्रमाण से एलर्जी है व सत्यसिद्धान्त की बात मानना तो दूर, सुनना भी नहीं चाहते। ऐसे लोग 'आस्था' की गुफा में बन्द रहते हैं। बाहर क्या है, इससे उनका कोई मतलब नहीं रहता—

जो तर्क नहीं करता, वह मूर्ख है, साहसहीन है, दब्बू है।
जो तर्क करता है, वह पुरुषार्थी, सत्यप्रेमी है, ज्ञानी है।
जो तर्क सुनता नहीं, वह स्वार्थी है, दुराग्रही है, अज्ञानी है।
जो तर्क की रक्षा करता है, वह परोपकारी है, साहसी है, दब्बू नहीं।

तर्क से अभिप्राय है—प्रमाणों के अनुसार सत्य का निश्चय करना। जब तक वादी-प्रतिवादी होकर वाद न किया जाए तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। इसीलिए लोकोक्ति बनी-**वादे वादे तत्त्वबोधः**।

आस्था का अर्थ शब्दकोश के अनुसार श्रद्धा है व श्रद्धा=श्रत्+धा अर्थात् सत्य को धारण करना। इस आधार पर राज्य सभा सदस्य बलवीर पुंज से हम पूछते हैं कि—

पौराणिकों की आस्थानुसार हनुमान बन्दर थे, परन्तु उनके द्वारा मान्यता प्राप्त हनुमान चालीसा की यह पंक्ति **'हाथ वज्र औ ध्वजा विराजे, कान्धे मूंज जनेऊ साजै'** कहती है कि हनुमान् मुंज का जनेऊ पहनते थे। क्या बन्दर जनेऊ पहनते थे या पहनते हैं? सीता की खोज में लंका में जाकर वे इधर-

शेष पृष्ठ 7 पर....

thearyasamaj.org

* ओ३म् *

नास्तिक का संग न करें

-: वेद-मन्त्र :-

मा त्वा मूरा अविष्यवो मोपहस्वान आ दभन्।
मा कीं ब्रह्मद्विषं वनः ॥ (साम० 732)

अर्थ—हे उपासक! (अविष्यवः) भोजन भट्ट (मूराः) मूढ़ लोग (त्वा) तुझे (मा आ दभन्) न दबा सकें, (मा उपहस्वानः) और न उपहास करने वाले तुझे (मा दभन्) न दबा सकें, अर्थात् सांसारिक सम्पत्तियों के लोभ द्वारा या उपासना मार्ग पर उपहास द्वारा तुझे उपासना मार्ग से च्युत न कर सकें। इसीलिये तू (ब्रह्म द्विषम्) वेद या ईश्वर से द्वेष करने वाले लोगों का (वनः) संग (मा कीम्) न किया कर।

मनुष्य का विकास समाज में रहकर होता है। वह जैसे लोगों की संगति करता है वैसा ही बन जाता है। आकाश से पानी की बूंद केले के पत्ते पर मोती जैसी भासित होती है और वही काले सर्प के मुख में पड़कर विष बन जाती है। स्वाति नक्षत्र में वही बून्द सीप के मुख में पड़कर मोती बन जाती है तथा गर्म तवे पर गिरने से उसका नाम शेष भी नहीं रहता। एक पानी की बूंद ने जैसी संगति की वैसा ही उसका रूपान्तर हो गया।

साधना का पथ कठिन है। यह छुरे की धार पर चलना है जिसमें पग-पथ पर बाधाएँ आ खड़ी होती हैं। कुछ समस्याएँ अपनी व्यक्तिगत होती हैं और कुछ वातावरण तथा दूसरे लोगों द्वारा दी जाती है।

वेद कहता है कि हे मुमुक्षुजन तुझे हिंसक, असामाजिक और पेटू लोग पीड़ा न पहुँचाएँ। ये दो प्रकार से पीड़ा देते हैं। पहले तो ये तेरा उपहास करेंगे। ये उपहास में भक्त जी कहकर पुकारेंगे। दूसरों के सामने तेरी खिल्ली उड़ायेंगे। कुछ खाओ-पीओ-मौज करो क्यों इस अनावश्यक कार्य में अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहे हो। किसने देखा है ईश्वर? यह तो चालाक लोगों द्वारा सीधे-सादे लोगों को बहकाने का एक साधन है। यह संसार अपने आप चल रहा है। इसे बनाने वाला कोई नहीं है। अगला जन्म किसने देखा है। इत्यादि मीठी बातें करके तेरा मनोबल गिराने का प्रयत्न करेंगे।

जब कहने-सुनने से उनका उद्देश्य पूरा नहीं होगा तब वे तुझे पीड़ा देना प्रारम्भ करेंगे, परन्तु हे साधक! तू इन नर-कण्टकों के प्रहार से विललित नहीं होना। ये बेचारे प्रभुभक्ति के आनन्द को जानते ही नहीं। तू इनके साथ कैसा व्यवहार करे यह महर्षि पतञ्जलि ने पहले ही बतला दिया है। ध्यान से सुन—

मैत्री करुणा मुदितोपेक्षाणां सुखदुःख पुण्यापुण्य भावनाश्चित्त प्रसादनम्।
योग० 1.33

सुखी लोगों से मित्रता, दुःखी लोगों को देखकर करुणा अर्थात् उनके दुःखों को दूर करने में सहयोग, पूर्वजन्म के पुण्यों के कारण जो श्रीमन्त, विद्वान्, नेता या किसी क्षेत्र में आगे बढ़ गये हैं उन्हें देखकर प्रसन्न होना कि धन्य है इसके माता-पिता और धन्य है यह व्यक्ति, जो अपने पुण्यकर्म और पुरुषार्थ से इतने उच्च पद पर पहुँचा है। ऐसे ही पापी को देखकर उपेक्षा का भाव रखना अर्थात् न उससे शत्रुता और न ही मैत्री करना। कीचड़ में पत्थर फेंकने से उसके छींटे फेंकने वालों के स्वच्छ वस्त्रों को ही मलिन करेंगे। कीचड़ तो कीचड़ है ही, उसका क्या बिगड़ेगा? ऐसा विचार कर उधर ध्यान नहीं देना। ऐसा व्यवहार करने से साधक का चित्त शान्त और प्रसन्न बना रहता है।

कई बार लोग सोचते हैं कि मेरे मन पर तो ऐसे लोगों में बैठने से कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। यह तर्क सही नहीं है। हमारे मस्तिष्क में आठ अरब न्यूरोन होते हैं, जो प्रत्येक देखी और सुनी बात को अंकित करते रहते हैं। इन्हीं से संस्कार बनते हैं जो जन्म-जन्मान्तर तक साथ जाते हैं। जब अच्छे संस्कार क्षीण या दब जाते हैं तो इन संस्कारों का प्रादुर्भाव चित्त की भूमि में हो जाता है। सूरदास जी कहते हैं—

क्रमशः

वेबसाईट-सूचना

गोरक्षा दल हरियाणा ने प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन दिनांक 8 फरवरी 2015 को अपनी अधिकारिक वेबसाईट को प्रक्षेपण (शुभारम्भ) किया है जो www.gaurakshadalharyana.org. के नाम से है। अधिक जानकारी एवं सुझाव के लिए मोबाइल नं० 9812611701 पर सम्पर्क करें। —मन्त्री

श्री मनीष सिंगला के प्रति कृतज्ञता

❑ प्राचार्य अभय आर्य, रोहतक

'रामायण' में श्रीराम के आर्य होने के अनेक गुण लिखे हैं। उन गुणों में एक गुण यह है कि श्रीराम दूसरे द्वारा अपने ऊपर किए हुए थोड़े से उपकार को भी बहुत बड़ा मानते थे तथा अपने द्वारा दूसरे पर किए हुए बहुत बड़े उपकार को भी थोड़ा मानते थे। आपने भी देखा होगा कि जब महापुरुषों को उनके किए हुए बहुत बड़े उपकार के बदले मात्र 'धन्यवाद' भी कहा जाता है तो वे बड़ी विनम्रता से उत्तर देते हैं—'कोई बात नहीं, यह तो मेरा कर्त्तव्य था।'

आचार्य अभय आर्य

'महाभारत' में अर्जुन अपनी शरण में आए मय असुर की श्रीकृष्ण से रक्षा करते हैं। मय बदले में जब अर्जुन के लिए कुछ करना चाहता है तो अर्जुन कहते हैं कि यह मुझे बिल्कुल रुचिकर नहीं लगता कि तुम मेरे द्वारा अपने प्राण बचाये जाने पर मेरे लिए कुछ करना चाहते हो। यही आर्यों का आदर्श होता है।

इसके विपरीत नीच व्यक्ति की यह पहचान है कि वह स्वयं के स्वार्थ के लिए दूसरे पर किए थोड़े से उपकार का भी ढिंढोरा पीटता रहता है। ऐसा व्यक्ति पराई हानि में लगा रहता है। उसका बहुत सारा जीवन ईर्ष्या व द्रोह में ही बीत जाता है।

पानीपत में 'सिंगला' बुक डिपो आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल में पुस्तक आदि की व्यवस्था करते हैं। आप आवश्यकता पड़ने पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यों में भी सहयोग करते हैं। 08.02.2015 को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में वाहन व्यवस्था में योगदान के सम्बन्ध में इसी बुक डिपो के मालिक श्री मनीष सिंगला जी उसी दिन चहल व कुछ अन्य व्यक्तियों को लेने पानीपत से सोनीपत की ओर जा रहे थे। रास्ते में समालखा के पास इनकी जीप ने संतुलन खो दिया तथा डिवाइडर से टकराकर पलट गई। दुर्घटना इतनी जबरदस्त थी जीप पूर्णरूप से क्षतिग्रस्त हो गई। ईश्वर की महती दया कि हमारे युवा प्रिय मनीष सिंगला को खरोंच तक नहीं आई। अत्यन्त हैरानी की बात है कि लाखों की हानि व मौत से साक्षात्कार के बाद भी श्री मनीष सिंगला ने किसी के सामने इस हादसे का ढिंढोरा नहीं पीटा। मात्र उस समय श्री जगदीश चहल को मोबाइल पर इसकी सूचना दे दी। श्री जगदीश चहल ने मुझे बता दिया। सम्मेलन के अगले दिन मैं विद्यालय में श्री मनीष सिंगला से मिला तो उनके चेहरे पर वही चिरपरिचित मुस्कान थी। पूछने पर उन्होंने कहा—'श्रीमान् कोई बात नहीं, गाड़ी का बीमा था।' शाब्दिक दृष्टि से हल्का-सा यह वाक्य भावनात्मक दृष्टि से अत्यन्त भारी है। मैं जानता था बीमा से पैसे निकलवाने की कठिनाई को, यह भी जानता था कि पैसे पूरे नहीं मिलेंगे। साथ ही यह भी जानता था कि दुर्घटना में युवा की जान को खतरा था। लेकिन श्री मनीष सिंगला इतने सहज थे कि मुझे कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर ही नहीं दे रहे थे। चन्द दिन बाद ही नई अल्टो कार खरीदकर उसे मुझे दिखाते हुए फिर मुस्कुरा रहे थे।

धन्यवाद, मनीष सिंगला! मैं आपके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। सभा से सम्बन्धित कोई व्यक्ति या अन्य यदि इस युवक के प्रति कृतज्ञता प्रकट करना चाहे तो इनका मोबाइल नंबर है—8295000812

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि 'साप्ताहिक' का शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक आप सभी का सहयोग चाहती है।

—सम्पादक

महर्षि दयानन्द सरस्वती : संक्षिप्त परिचय

महर्षि स्वामी दयानन्द जी का जन्म गुजरात के टंकारा गांव में एक सम्पन्न ब्राह्मण परिवार में हुआ। उनके बचपन का नाम मूलशंकर था। उस समय देश गुलाम था। समाज में बालविवाह, सतीप्रथा, देवदासीप्रथा, जड़मूर्तिपूजा, पाखंड, अन्धविश्वास, कुलपरम्परा आदि अनेक प्रकार की कुरीतियां थीं। महर्षि स्वामी दयानन्द जी जब 14 वर्ष की आयु के थे। कुलपरम्परा के अनुसार पिता जी ने महाशिवरात्रि का व्रत रखवाया और कहा कि जो सारी रात जागेगा उसे सच्चे शिव (ईश्वर) के दर्शन होंगे। मंदिर में सब पुजारी सो गये, लेकिन बालक मूलशंकर सच्चे शिव के दर्शन पाने के लिए जागते रहे और देखा कि कुछ चूहे शिवलिंग पर मल-मूत्र कर रहे हैं वह यह दृश्य देखकर बालक विचारने लगा व सोचने लगा कि यह सच्चा शिव नही हो सकता। जो चूहों से अपनी रक्षा नही कर सकता वह हमारी रक्षा क्या करेगा। सच्चे शिव की खोज के लिए माता-पिता, परिवार, सगे-सम्बन्धी सभी नाते छोडकर घर से निकल पड़े। बहुत कठिन परिश्रम करने के बाद अन्त में सच्चे शिव (ईश्वर) को वेदों से जाना व बोध हुआ, उन्होंने देश में समाज की मूल कुरीतियों को दूर करने के लिए अनेक ग्रन्थ लिखे। उनका मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश है। इसमें 14 समुल्लास हैं। जो इस प्रकार है :- पहला-ईश्वर के ओंकार आदि नामों की व्याख्या। दूसरा-संतानों की शिक्षा का विषय। तीसरा-ब्रह्मचर्य पठन-पाठन की व्यवस्था, सत्य असत्य आर्ष अनार्ष ग्रन्थों के नाम, पठने पठाने की विधि। चौथा-विवाह और गृहस्थ आश्रम का व्यवहार। पांचवां-वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की विधि। छठा-राजधर्म। सतवां-वेद और वेद के अन्दर ईश्वर का विषय। आठवां-जगत् की उत्पत्ति, स्थिति प्रलय। नौवा-विद्या और अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या। दसवां-आचार अनाचार, भक्ष्याभक्ष्य। ये दस समुल्लास मनुष्य जीवन के धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के चार फल सत्य शिक्षा के विषय हैं। ग्यारहवां-आर्यावर्तीय मतमतान्तर के खण्डन मण्डन के विषय। बाहरवां-चारवाक व बौद्ध और जैनमत का विषय। तैरहवां-ईसाइयों के मत का विषय। चौदहवां-मुसलमानों के मत का विषय। चौदह समुल्लासों के अन्त में आर्योके सनातन वेदविहित मत की विशेषता की व्याख्या लिखी है।

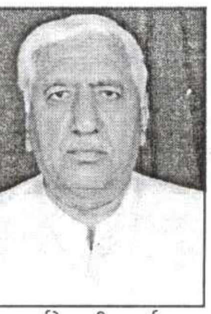

धर्मदेव जी आर्य

उनके लिखित ग्रंथो में ब्रह्मा से ले करके जैमिनि ऋषि मुनिकृत आर्ष वैदिक सिद्धान्त सत्य मान्यताए हैं। उनके द्वारा लिखित आर्योद्देश्यरत्नमाला में तीर्थों के बारे में लिखा हैं। तीर्थ जितने विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वर उपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य जितेन्द्रियतादि उत्तम कर्म हैं वह सब तीर्थ कहलाते हैं, क्योकि इन करके जीव दुःखसागर से तर जा सकते हैं। जीते माता पिता आचार्य अतिथि ईश्वर को यथायोग्य जानकर सत्कार करके प्रसन्न करना तीर्थ कहलाते हैं। इतर जल स्थल आदि को नहीं। यदि मनुष्य आर्षविद्या से पठन पाठन, विद्याभ्यास, सुविचार, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि द्वारा ईश्वर उपासना, धर्मानुष्ठान सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रयतादि उत्तम कर्मो को सत्य असत्य से मूल्यांकन करता है। तो अब भी सच्चे तीर्थ ईश्वर को प्राप्त कर सकता है। आर्षविद्या चार प्रकार से आती हैं आगमकाल, स्वाध्यायकाल, प्रवचन, व्यवहार काल। विद्या प्राप्ति न होने के तीन कारण है-कर्ता में दोष क्रिया में दोष व कर्म में दोष। सत्य की परीक्षा करके पांच प्रकार की कसौटियां हैं। परीक्षा की परिभाषा जो प्रत्यक्ष आदि आठ प्रमाण वेद विद्या आत्मा की शुद्धि सृष्टि कर्म से अनुकूल विचार करके सत्य असत्य का निश्चय कर सकता है।

सत्य की परिभाषा-जैसा देखा सुना पढा जितना आत्मा में ज्ञान हो वाणी से बोलना वैसा व्यवहार में लाना सत्य कहलाता है। सत्य का फल-सत्यप्रतिष्ठायाम् क्रियाफलाश्रयत्वम्। पहली कसौटी जो जो ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव वेदों के अनुकूल है वह वह सत्य है और जो जो उससे विरुध है वह असत्य है। ईश्वर जिसके गुण कर्म स्वभाव व स्वरुप सत्य ही है जो केवल एक चेतन मात्र वस्तु है, तथा जो अद्वितीय, सर्वशक्तिमान्, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनन्त आदि सत्यगुणवाला है और जिसका स्वभाव अविनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है, जिसका कर्म जगत् की उत्पति, पालन और विनाश करना तथा सर्व जीवों को पाप-पुण्य के फल ठीक ठीक पहुंचाना है, उसको ईश्वर कहते हैं।

दूसरी कसौटी-जो-जो सृष्टिक्रम से अनुकूल विचार करके वह वह सत्य और जो जो विरुद्ध है वह सब असत्य है। जैसा कोई कहे की बिना माता पिता के सन्तान उत्पन हुआ, ऐसा सृष्टिक्रम से विरुद्ध है, असत्य है।

तीसरी कसौटी-आप्त जो धार्मिक विद्वान् सत्यवादी निष्कपटियों का संग और उपदेशों के अनुकूल है वह-वह तो ग्रहण और जो इससे विरुद्ध है वह अग्रहण है। आप्त जो छलादि दोष-रहित, धर्मात्मा, विद्वान्, सत्योपदेष्टा, सब पर कृपादृष्टि से वर्तमान होकर अविद्यान्धार का नाश करके अज्ञानी लोगों के आत्माओं में विद्यारूप सूर्य का प्रकाश सदा करे।

चौथी कसौटी-अपने आत्मा की पवित्रता, विद्या के अनुकूल जैसा सुख प्रिय और दुःख अप्रिय है।

पांचवीं कसौटी-आठ प्रमाण प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द, एतिह्य, अर्थापति, सम्भव, अभाव । इन पांच प्रकार की कसौटियों से सत्य-असत्य को जान सकता है। वाक्य अर्थ बोध मे चार कारण हैं जो आकांक्षा, योग्यता, आसक्ति, तात्पर्य।

आकांक्षा-किसी विषय पर वक्ता की और वाक्यगथ पदों की आकांशा परस्पर होती है।

योग्यता-वह कहाती है कि जिस से जो हो सके, जैसे जल से भूमि को सींचना।

आसत्ति-जिस पद के साथ जिसका सम्बध हो उसी के समीप पद का बोलना व लिखना।

तात्पर्य-जिसके लिए वक्ता के शब्दोच्चारण वा लेख किया हो उसी के साथ उस वचन व लेख को युक्त करना। मनुष्य प्रकंरणयुक्त प्रकरणवित् से जान कर दृढ सत्य संकल्प से ईश्वर आज्ञा पालन करे तो अपने गुण कर्म स्वभाव अच्छी तरह प्रीति प्रसन्नता से ईश्वर की दृष्टि और सहाय से परिपक्व करके गुण अर्थात चेतन, अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, सुख दुःख और ज्ञान गुणवाला तथा नित्य है। स्वभाव-पवित्रता, अविनाशी, धार्मिकता पंचकोश षट्क सम्पति आदि। कर्म जो सन्तान उत्पति पालन शिल्पविद्या अच्छे बुरे कर्म सामर्थ्य बल पराक्रम आकर्षण प्रेरणा गति भीषण विवेचन क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, प्रेम, द्वेष, संयोग, विभाग, संयोजक, विभाजन, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन और गन्धग्रहण तथा ज्ञान सामर्थ्ययुक्त जीव है। प्रतिप्रसन्नता से मूल्यांकन करे, तो अब भी सच्चे तीर्थ (ईश्वर) को प्राप्त कर सकता है और दुःखसागर, जन्म-मरण से तर सकता है। वर्ण उच्चारण ग्रंथ से ले करके वेदों का शब्द, अर्थ, सम्बन्ध, अन्वय, भाष्य, क्रम, जटा, शिखा, रेखा, ध्वज, दण्ड, रथ, अष्टकादि, धन, ईश्वर आज्ञा पालना राष्ट्र भाषा हिन्दी में किया है। यह एक विशेष उत्तम कार्य किया है। राष्ट्र समाज उनका सदा ही कर्जदार/ऋणी रहेगा। महर्षि स्वामी दयानन्द जी एक सच्चे समाज सुधारक थे। उनकी जयन्ती पर उनके वैदिक मूल सिद्धान्त/ मान्यताएं/सभ्यताएं, संसार देश तथा समाज में फैली मूल कुरीतियों को जड़ से उखाड़ सकते हैं। संसार में मूल कुरीतियों को दूर करने के लिए आर्यसमाज के दस नियम, सौ उद्देश्य बनाए वह इस प्रकार से हैं। दस नियम-सौ उद्देश्य जो ईश्वर से लेकर नमस्ते तक मूल सिद्धान्त सभ्यताए हैं। अन्धविश्वास को वैदिक मार्ग से ही दूर किया जा सकता है। अन्य से नहीं।

हमें संकल्प लेना चाहिये कि हम सभी को महर्षि स्वामी दयानन्द जी के ग्रंथों को पढना चाहिए और अपने व्यवहार में लाना चाहिए। इनको सुन मत डालना, सुन रखना। नमस्ते-मैं आपका मान्य करता हूं।

–धर्मदेव आर्य, महात्मा प्रभु
आश्रित आर्ष गुरुकुल सुन्दरपुर
रोहतक 09315480937

निःशुल्क ध्यान योग विज्ञान शिविर एवं बृहद्यज्ञ

(दिनांक सोमवार 23 मार्च से रविवार 29 मार्च 2015 तक)

सानिध्य : **पूज्य स्वामी धर्ममुनि जी महाराज**, मुख्याधिष्ठाता आत्मशुद्धि आश्रम बहादुरगढ़, यज्ञ ब्रह्मा : **पूज्य स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती**, संचालक गुरुकुल पूठ गाजियाबाद, ध्यान योग साधना : **आचार्य राजहंस मैत्रेय**, आत्मशुद्धि आश्रम, बहादुरगढ़, आसन प्राणायाम प्रशिक्षण : **योगनिष्ठ सत्यपाल जी वत्स आर्य**, बहादुरगढ़।

निवेदक : स्वामी धर्ममुनि दुग्धाधारी, मुख्य अधिष्ठाता
आत्मशुद्धि आश्रम (पंजीकृत न्यास) बहादुरगढ़ जिला झज्जर
हरियाणा 124507 दूरभाष : 01276-230195, चलभाष : 09416054195

आर्य अभिनन्दन

आर्यसमाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक जिनकी आयु 60 वर्ष अथवा उससे ज्यादा हो गई है, हम उन सब का इसी वर्ष में अभिनन्दन करेंगे। आप अपना फोटो, कार्यक्षेत्र, अन्य सूचना भेजें। एक पुस्तिका भी छापी जायेगी। पत्र तथा सूचना देने का पता—

ठाकुर विक्रम सिंह
A-41, IInd तल, लाजपत नगर-II,
निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-110024

thearyasamaj.org

सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी

भूमिका के प्रश्नोत्तर

❑ कन्हैयालाल आर्य, कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

गतांक से आगे....

प्रश्न-41. परमेश्वर का नाम 'गरुत्मान्' क्यों है?

उत्तर-जिसका आत्मा अर्थात् स्वरूप महान् है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'गरुत्मान्' है।

प्रश्न-42. परमेश्वर का नाम 'मातरिश्वा' क्यों है?

उत्तर-जो वायु के समान अनन्त बलवान है, इसलिए परमेश्वर का नाम 'मातरिश्वा' है।

प्रश्न-43. परमेश्वर का नाम 'भूमि' क्यों है?

उत्तर-जिसमें सब भूत प्राणी होते हैं, इसलिए परमेश्वर का नाम 'भूमि' है।

प्रश्न-44. परमेश्वर का नाम 'विराट्' क्यों है?

उत्तर-जो बहु प्रकार के जगत् को प्रकाशित करे, इससे 'विराट्' नाम से परमेश्वर का ग्रहण होता है।

प्रश्न-45. परमेश्वर का नाम 'विश्व' क्यों है?

उत्तर-जिसमें आकाश आदि सब भूत प्रवेश कर रहे हैं अथवा जो इनमें व्याप्त होके प्रविष्ट हो रहा है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'विश्व' है।

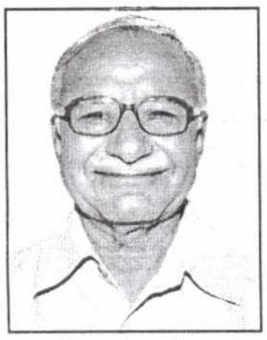

कन्हैयालाल जी आर्य

प्रश्न-46. परमेश्वर का नाम 'हिरण्यगर्भ' क्यों है?

उत्तर-जो सूर्यादि तेज:स्वरूप पदार्थों का गर्भ नाम, अर्थात् उत्पत्ति और निवास-स्थान है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'हिरण्यगर्भ' है।

प्रश्न-47. परमेश्वर का नाम 'वायु' क्यों है?

उत्तर-जो चराचर जगत् का धारण, जीवन और प्रलय करता है और सब बलवानों से बलवान है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'वायु' है।

प्रश्न-48. परमेश्वर का नाम 'तैजस्' क्यों है?

उत्तर-जो आप प्रकाशस्वरूप और सूर्यादि लोकों का प्रकाश करने वाला है, इससे उस परमेश्वर का नाम 'तैजस्' है।

प्रश्न-49. परमेश्वर का नाम 'ईश्वर' क्यों है?

उत्तर-जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'ईश्वर' है।

प्रश्न-50. परमेश्वर का नाम 'आदित्य' क्यों है?

उत्तर-जिसका विनाश कभी न हो, इससे उस परमेश्वर का नाम 'आदित्य' है।

प्रश्न-51. परमेश्वर का नाम 'प्राज्ञ' क्यों है?

उत्तर-जो निर्भ्रान्त ज्ञानयुक्त, सब चराचर जगत् के व्यवहार को यथावत् जानता है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'प्राज्ञ' है।

प्रश्न-52. परमेश्वर को 'मित्र' क्यों कहा है?

उत्तर-जो सबसे स्नेह करके और सबसे प्रीति करने योग्य है, इसीलिए उस परमेश्वर का नाम 'मित्र' है।

प्रश्न-53. परमेश्वर का नाम 'वरुण' क्यों है?

उत्तर-आत्मज्ञानी, विद्वान्, मुक्ति की इच्छा करने वाले धर्मात्माओं का स्वीकारकर्ता और सबसे श्रेष्ठ होने के कारण परमेश्वर को 'वरुण' कहा गया है।

प्रश्न-54. परमेश्वर को 'अर्यमा' क्यों कहा गया है?

उत्तर-जो सत्य न्याय के करने हारे मनुष्यों को मान्य पाप तथा पुण्य करने वालों को पाप और पुण्य के फलों का यथावत् सत्य-सत्य नियमकर्त्ता है, इसी से उस परमेश्वर का नाम 'अर्यमा' है।

प्रश्न-54. परमेश्वर को 'बृहस्पति' क्यों कहा गया है?

उत्तर-जो बड़ों से भी बड़ा और बड़े आकाशादि ब्रह्माण्डों का स्वामी है, इसी से उस परमेश्वर का नाम 'बृहस्पति' है।

प्रश्न-55. परमेश्वर का नाम 'उरुक्रम' क्यों है?

उत्तर-अनन्त पराक्रम युक्त होने से परमेश्वर का नाम 'उरुक्रम' है।

क्रमश:

क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्य वन, रोजड़, पो० सागपुर
जिला साबरकांठा गुजरात
सम्पर्क सूत्र-दूरभाष-02770-287417, 9427059550

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक की अध्यक्षता में वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में 5 अप्रैल से 12 अप्रैल 2015 तक 8 दिन के योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, इसमें आपका स्वागत है तथा आपके कल्याण की कामना करते हैं। शिविरार्थी 5 अप्रैल को सायंकाल 4 बजे तक शिविर स्थल पर पहुँच जावें। शिविर समापन 12 अप्रैल को मध्याह्न लगभग 1 बजे होगा।

शिविर में क्रियात्मक योग साधना सिखाने के साथ-साथ योगदर्शन के सूत्रों का अध्यापन, यम-नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विवेक, वैराग्य, अभ्यास, जप-विधि, ईश्वर-समर्पण, स्वस्वामी-सम्बन्ध तथा ममत्व को हटाने जैसे अनेक सूक्ष्म आध्यात्मिक विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया जाएगा। शिविर की दिनचर्या प्रात: 4 बजे से रात्रि 9.30 बजे तक रहेगी।

शिविर शुल्क 1000 रु० कृपया निम्न बैंक खाते में जमा करावें-
नाम-क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविर 2015
नंबर 01790100018052
शाखा बैंक ऑफ बड़ौदा, धनसुरा जिला अरवल्ली
IFSC No. BARBODHANSU

जनहित में सूचना

जनहित में नि:शुल्क बवासीर तथा सन्तान हेतु तुरन्त सम्पर्क करें—

धर्मपाल शास्त्री
सैक्टर-14, म०नं० 521, रोहतक मो० 9467280351

ओ३म्
(प्राचीन व आधुनिक शिक्षा का उत्तम सामंजस्य केन्द्र)

गुरुकुल भैयापुर लाढ़ौत, रोहतक (हरियाणा)
GURUKUL BHAIYAPUR LADHOT, ROHTAK
(Affiliated with C.B.S.E. New Delhi Code No. 531114)

गुरुकुल में उपलब्ध सुविधाएं एवं आवश्यक निर्देश

- लिखित परीक्षा द्वारा 6 अप्रैल को मैरिट के आधार पर प्रवेश। नियमावली उपलब्ध है।
- प्रविष्ट छात्रों का हॉस्टल में रहना आवश्यक है।
- संध्या-हवन, योगासन, प्राणायाम खेल समन्वित नियमित दिनचर्या और धर्म शिक्षा द्वारा संस्कारित वातावरण।
- सी.बी.एस.ई. बोर्ड नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त (मान्यता क्रमांक 531114) है।
- इंग्लिश मीडियम (अंग्रेजी माध्यम)।
- 10+1, 10+2 में आर्ट, कॉमर्स तथा नॉन मेडिकल संकाय।
- आर्मी, नेवी तथा एयरफोर्स के लिए भर्ती में प्रशिक्षण।
- सी.सी.टी.वी. कैमरों की व्यवस्था।
- पुस्तकालय, वाचनालय, कम्प्यूटर तथा विज्ञान की आधुनिक प्रयोगशालाएं।
- इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स के लिए भाषा प्रयोगशाला।
- शुद्ध जल का निजी प्रबन्ध।
- संस्था में स्थापित पं० रामप्रसाद बिस्मिल खेल अकादमी के माध्यम से खेल प्रशिक्षण। प्रशिक्षित कोचों एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों द्वारा समय-समय पर दिशा निर्देश।
- शुद्ध दूध के लिए निजी गोशाला।
- 6 एकड़ का स्वच्छ तथा रमणीय परिसर।
- स्टेशनरी तथा खाद्य पदार्थों के लिए कैन्टीन तथा वस्तु भण्डार की सुविधा।

3 K.M. STONE FROM BUS STAND, LADHOT ROAD, ROHTAK (HARYANA)
Contact : 01262-217550, 09992403892, 09467240298, 09416629972

thearyasamaj.org

सुनो केजरीवाल, काम करके दिखलाना

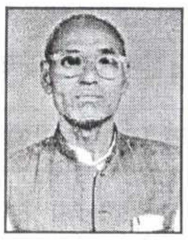

कहते आये जगत् में, योगी गुणी महान्।
मिट जाते हैं एक दिन, जो करते अभिमान॥
जो करते अभिमान, अन्त में वे पछताते।
मिलते हैं प्रमाण, कभी वे सुख ना पाते॥
धन बल पाकर ठीक नहीं, मित्रो! बौराना।
अभिमानी से दूर भागता, सदा जमाना॥
नरेन्द्र मोदी देश में, नेता हैं गुणवान।
अमित शाह उसका सखा, बनता चतुर सुजान॥
बनता चतुर सुजान, बड़ा बनता स्वाभिमानी।
हुआ दम्भ में चूर, बड़ी की है नादानी॥
किरण बेदी को साथ, लगा करके हर्षाया।
कार्यकर्त्ता रुष्ट किए, निजी वजन घटाया॥
दिल्ली जनता पार्टी के, नेता हैं नादान।
प्रमादी सब बन गए, भूल कर्म प्रधान॥
भूल कर्म प्रधान, भाग्यवादी बन बैठे।
भूल गए कर्त्तव्य, स्वार्थ में पगले ऐंठे॥
सब कुछ मोदी मान, न की जनता की सेवा।
फिर क्यों मिलती इन्हें, सुयश की पावन मेवा॥
अरविन्द केजरीवाल ने, किया रात-दिन काम।
दिल्ली वासी लग गए, उसके साथ तमाम॥
उसके साथ तमाम, कष्ट वह भारी पाया।
सहा बड़ा अपमान, बहादुर ना दहलाया॥
मेहनत का फल मधुर, मनुष्य को ईश्वर देता।
बदले में भगवान्, किसी से कुछ ना लेता॥
दिल्ली की जनता बड़ी, समझदार होशियार।
अरविन्द केजरीवाल को, दिया निराला प्यार॥
दिया निराला प्यार, गजब की जीत दिलाई।
सब जनसेवक बनो, अनोखी सीख सिखाई॥
सुनो केजरीवाल! काम करके दिखलाना।
अगर न दोगे ध्यान, पड़ेगा फिर पछताना॥
जगत् गुरु दयानन्द की, शिक्षाएं लो मान।
हो जाएगा आपका, फिर निश्चित कल्याण॥
नेता जी! कल्याण, करेगा जग का स्वामी।
दयासिन्धु जगदीश, न्यायकारी है नामी॥
प्रभु को रखना याद, मौज मारोगे भारी।
श्रीमान् जी! बनो, तपस्वी परोपकारी॥

—पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक, आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल (हरयाणा) मो० 9813845774

शुभ सूचना

सभी धर्मप्रेमी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि आगामी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सृष्टिसंवत् 1,96,08,53,116 (शनिवार 21 मार्च 2015) को प्रारम्भ हो रहा है। इस उपलक्ष्य में दयानन्दमठ, गोहाना रोड, रोहतक के प्रांगण में पर्यावरण की शुद्धि के लिए वैदिक रीति से यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। सभी से प्रार्थना है कि वह समय पर पहुँचकर पुण्य के भागी बनें।

यज्ञ—प्रात: 8.30 से 9.30 बजे तक। यज्ञ ब्रह्मा-**आचार्य वेदमित्र जी**

भजन—9.30 से 10 बजे तक। **श्री सुशील आर्य**

मुख्यवक्ता—**डॉ० सुरेन्द्र कुमार** (अध्यक्ष, महर्षि दयानन्द विद्यापीठ महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक) प्रात: 10.00 से 11.15 तक

संयोजक—**मा० रामपाल आर्य** (मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) प्रात: 11.15 से 11.35 तक

अध्यक्षता—**आचार्य विजयपाल जी** (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा) प्रात: 11.35 से दोपहर 12 बजे तक।

आशीर्वाद—**आचार्य बलदेव जी** (प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली)

निवेदक—

आर्यसमाज सैक्टर-1, रोतहक, **स्त्री आर्यसमाज**, देवकालोनी रोहतक, **आर्यसमाज**, प्रेमनगर दुर्गा कॉलोनी, रोहतक, **वैदिक ज्ञान प्रसार न्यास**, रोहतक।

सम्पर्क सूत्र-09466008120, 09728884949, 09355674547

आर्यसमाज की प्रथम भजनोपदेशिका माई भगवती

आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानन्द ने नारी शिक्षा के महत्त्व को समझा अपितु उसे क्रियान्वित भी किया। उनका कहना था कि नारी को न केवल उच्च शिक्षा सम्पन्न होना चाहिए अपितु धर्म और सदाचार के प्रचार में भी उसे अपना योगदान करना चाहिए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्होंने संस्कृत की पण्डिता दाक्षिणात्य महिला रमाबाई को धर्मप्रचार का कार्य करने के लिए कहा। यह विडम्बना ही थी कि रमाबाई ने ऋषि के कथन पर कोई ध्यान नहीं दिया।

वस्तुत: पंजाब के होशियारपुर जिले के ग्राम हरयाणा में उत्पन्न माई भगवती को यह श्रेय जाता है कि वह वैदिक धर्म की प्रथम भजनोपदेशिका बने। ऋषि से उनकी भेंट मुम्बई में हुई और वे ऋषि आदेश को स्वीकार कर धर्म प्रचार में लग गईं। उनके भजनों का एक अबलामति वेग रोधक संगीत का विरजानन्द यंत्रालय लाहौर ने 1893 में प्रकाशित किया था। माई भगवती विषयक अन्य तथ्य अन्वेषणीय है।

वैदिक विद्वान् पं० राजवीर शास्त्री : पुण्य संस्मरण

सुख्यात वैदिक विद्वान् तथा दयानन्द साहित्य के मर्मज्ञ पं० राजवीर जी का गत 24 सितम्बर को लगभग 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया था। उनका अध्ययन गुरुकुल झज्जर में सुयोग्य विद्वानों के निरीक्षण में हुआ था। वे वेद, व्याकरण, निरुक्त तथा दयानन्दीय वाङ्मय के अद्वितीय पण्डित थे। कालान्तर में लाला दीपचंद द्वारा स्थापित आर्ष साहित्य प्रकाशन ट्रस्ट के प्रकाशन प्रभारी होकर दिल्ली आ गये तथा ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित साहित्य का सम्पादन करते रहे। वे सरकारी सेवा (अध्यापक) से निवृत्त होने के पश्चात् मोदी नगर रहते थे और वहीं से दयानन्द संदेश का सम्पादन भी करते थे।

पं० राजवीर ने ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित स्वामी जी की अनेक कृतियों का सम्पादन तथा पाठ निर्धारण किया था। सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्याभिविनय आदि ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ये संस्करण विशेष महत्त्व के हैं। मेरा शास्त्री जी से आद्यन्त स्नेह रहा। वे अत्यन्त विनम्र थे। वर्षों पहले भेंट हुई थी। उनकी कीर्ति चिरस्थायिनी है।

—भवानीलाल भारतीय, 315 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर (राज०)

वसन्त पंचमी पर यज्ञ व उपदेश सम्पन्न

दिनांक 24 जनवरी 2015 को अठगामा भवन मऊ (महम) में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम आचार्य वेदमित्र के ब्रह्मत्व में बृहद यज्ञ हुआ। मुख्य यजमान श्री बलराज कुण्डू थे। कार्यक्रम में श्री ओमप्रकाश धनखड़ (मंत्री, हरियाणा सरकार) श्री मनीष ग्रोवर एमएलए रोहतक के अतिरिक्त अनेक विशिष्ट महानुभाव उपस्थित हुए। आचार्य जी ने वेद में वर्णित नेता के अनेक गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि नेता समाज को बहुत ऊँचा उठा सकता है। चौ० छोटूराम ने अपनी नेक कमाई से अनेक योग्य बालकों को पढ़ाया तथा पाखण्ड हटाने का कार्य ऋषिभक्त होने से किया।

इसी दिन छोटूराम विद्यालय अजायब में भी आचार्य जी ने यज्ञ व उपदेश दिया। ब्रह्मचर्यकाल में विद्या तथा प्रतिभाओं का विकास आचार्य करते रहे हैं, उन्हीं तपस्वी, चरक, कपिल, पतञ्जलि का निर्माण आचार्य करके धन्य होते थे। इसी प्रकार 22, 23 जनवरी को आचार्य जी द्वारा सुण्डाना तथा मुरादपुर टेकना रोहतक में यज्ञ व उपदेश कार्यक्रम सम्पन्न किया।

—वैदिक योगाश्रम भऊ आर्यपुर, रोहतक

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1.	आर्यसमाज औरंगाबाद मित्रौल जिला पलवल	27 फर० से 1 मार्च 2015
2.	आर्यसमाज रसूलपुर जिला महेन्द्रगढ़	28 फर० से 1 मार्च 2015
3.	आर्यसमाज आर्यनगर जिला हिसार	28 फर० से 1 मार्च 2015
4.	आर्यसमाज खेड़की जिला महेन्द्रगढ़	7 से 8 मार्च 2015
6.	गुरुकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद	7 से 8 मार्च 2015
5.	आर्यसमाज शेखपुरा खालसा, निकट घरोण्डा जिला करनाल	20 से 22 मार्च 2015

—सभामन्त्री

महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव धूमधाम से मनाया गया

आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल पानीपत में आर्यसमाज के संस्थापक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मोत्सव तथा ऋषि बोधोत्सव दिनांक 17.2.15 मंगलवार को विद्यालय के प्रांगण में भाषण प्रतियोगिता तथा भजन गायन प्रतियोगिता के रूप में तत्पश्चात् शोभायात्रा के रूप में धूमधाम के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। सर्वप्रथम विद्यालय के संस्कृताचार्य आचार्य राजकुमार शर्मा के ब्रह्मत्व में वैदिक यज्ञ कराया गया। यज्ञोपरान्त सभी सदनों के बच्चों ने महर्षि दयानन्द तथा उनके वैदिक सिद्धान्त विषय पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। सभा की अध्यक्षता विद्यालय के निदेशक मान्य श्री आचार्य अभय आर्य जी ने की। अध्यक्ष महोदय ने महर्षि दयानन्द सरस्वती पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि महर्षि एक महान् समाज सुधारक तथा वेदों के उद्भट् विद्वान् थे। उनकी विचारधारा का अनुसरण करके आज संसार सुख की ओर अग्रसर है। धर्माचार्य आचार्य राजकुमार शर्मा ने कहा कि महर्षि दयानन्द न केवल एक अध्यात्मवेत्ता ही थे अपितु वे तो कन्या शिक्षा के प्रबल समर्थक थे एवं गोरक्षक थे। उन्होंने देश आजादी के लिए अनेक राष्ट्रभक्त वीरों को तैयार किया तथा प्रेरित किया।

भाषण प्रतियोगिता में पटेल सदन की छात्रा प्रगति प्रथम रही वहीं श्रद्धानन्द सदन की छात्रा ऋचा द्वितीय स्थान पर रही। तृतीय स्थान पर प्रताप सदन की रुहानी ने प्राप्त किया। सान्त्वना पुरस्कार दयानन्द सदन के छात्र साहिल ने प्राप्त किया। भजन गायन प्रतियोगिता में दयानन्द सदन की ऋतु प्रथम रही, प्रताप सदन की शिवांगी द्वितीय तथा प्रियंका पटेल सदन की तृतीय स्थान पर रही। सान्त्वना पुरस्कार सान्या श्रद्धानन्द सदन ने प्राप्त किया।

सभी विजयी छात्रों तथा सदनों को राशि पुरस्कार के द्वारा सम्मानित तथा पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के उपरान्त छात्रों, छात्राओं तथा अध्यापकों व अध्यापिकाओं ने विशाल शोभायात्रा निकालकर तथा लेखन सामग्री बांट-बांटकर घर-घर तक तथा जन-जन तक महर्षि दयानन्द के विश्वकल्याणकारी सिद्धान्तों तथा नियमों को पहुंचाया। बच्चों ने रास्ते में उद्घोष किए तथा भजन गाए। शोभायात्रा का सुन्दर संचालन श्री जगदीश आर्य, संदीप आर्य, गुलाब सिंह, प्रदीप, राजेश आदि सभी ने मिलकर किया। शोभायात्रा को विद्यालय की प्राचार्या श्रीमती रेखा शर्मा ने ओ३म् के ध्वज के साथ शुभारम्भ की अनुमति दी।

इस अवसर पर जितेन्द्र आर्य, कपिल आदि विशेष रूप से उपस्थित रहे। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

तर्कहीन आस्था = असत्य निष्ठा... पृष्ठ 2 का शेष.....

उधर घूमते रहे। सीता से भेंट होने से पूर्व एक विचार उनके मन में वानप्रस्थ ग्रहण करने का भी आया था—

सोऽहं नैव गमिष्यामि किष्किन्धां नगरीमितः।
वानप्रस्थो भविष्यामि ह्यदृष्ट्वा जनकात्मजाम्॥

(वाल्मीकिरामायण, सुन्दर काण्ड का प्रथम सर्ग:) इसके अतिरिक्त हनुमान ने स्वयं को पवन देव का औरस पुत्र स्वीकार किया था—**अहं तु हनुमान्नाम मारुतास्यौरसः सुतः** (वा.रा. सुंदरकांडम्, त्र्यस्त्रिंशः सर्गः) हमें आप बताइए कि वानप्रस्थी कौन बनते हैं? मनुष्य या बन्दर? क्या बन्दरों के औरस पुत्र होते हैं? इस ऐतिहासिक प्रमाणों के आधार पर सत्य यह है कि हनुमान् जी मनुष्य ही थे परन्तु लोगों की 'आस्था' के अनुसार वे बन्दर थे। आप सत्य विरोधी आस्था का खण्डन करेंगे?

2. अभी कुछ दिन पूर्व एक संन्यासी ने बयान दिया है कि धर्म के ठेकेदार सिद्ध करें कि श्रीराम व श्रीकृष्ण भगवान् थे। इस पर स्वयंभू केन्द्रीय सनातन धर्म सभा के एक कथित प्रधान ने मांग कर दी है कि इस संन्यासी को गिरफ्तार किया जाए। यह मांग यही बताती है कि पौराणिकों के पास अपनी मान्यताओं को सही सिद्ध करने को कोई तर्क प्रमाण व युक्ति उपलब्ध नहीं है तथा सारी मान्यताएं अन्धविश्वासों पर टिकी हैं जिन्हें वे 'आस्था' का नाम देते हैं। किसी महापुरुष के विषय में जिज्ञासा प्रकट करना संविधान की किस धारा के अधीन अपराध है?

3. इंटरनेट पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार अफ़गानिस्तान का मिण्डारी बहरुद्दीन नामक एक व्यक्ति अहमदाबाद में आकर एक वेश्या के यहाँ रहा था। वहीं चांद मियां नामक पुत्र जन्मा था जो मांसाहारी रहा। इसी मुसलमान पुत्र को हजारों अन्धविश्वासी हिन्दू सत्य साईं बाबा कहते व पूजते हैं। इस कथित भगवान् ने देश, धर्म व जाति के लिए कोई त्याग या बलिदान नहीं दिया, न ही देश या समाज किसी समस्या का समाधान ही किया परन्तु अन्धविश्वासी लोग उसे महापुरुष तो क्या, ईश्वर मानकर उसकी पूजा करते हैं व उसे 'ऊँ साईं राम' नाम से याद करते हैं। शंकराचार्य स्वरूपानन्द ने ये सारे पोल खोलकर देश को जागरूक व सावधान रहने को कहा है तो क्या अपराध किया है? साईं बाबा के भक्त उनके विरुद्ध मुकदमा दायर कर रहे हैं तथा उन्हें धमकियाँ दे रहे हैं। ये लोग तथ्य व सत्य के विरोधी हैं व आरोपों के उत्तर देने की बजाए 'आस्था' की गुफ़ा में बन्द रहना चाहते हैं। इन्हें याद रखना चाहिए कि गुफ़ा में अन्धकार ही अन्धकार है, जिसके रहते ताज़ी वायु व प्रकाश उन्हें नहीं मिल सकता। इस गुफ़ा के बाहर खड़ा सत्य इन्हें बाहर निकलकर प्रकाश व वायु का लाभ लेने की प्रार्थना कर रहा है। तर्क इनकी गुफ़ा का द्वारा खटखटा रहे हैं व प्रमाण इन्हें शास्त्रार्थ करने की चुनौती दे रहे हैं। समाजहित इन्हें अनुरोध कर रहा है कि वे अपनी 'आस्था' को राष्ट्र की भावनात्मक एकता व सैद्धान्तिक निष्ठा के आगे समर्पित कर दें। **संपर्क-चूना भट्टियां, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर 09466123677**

धर्म, मत-मतान्तर और भूख... प्रथम पृष्ठ का शेष.....

का कुछ अनुमान तो लगाया ही जा सकता है। इसका भावी परिणाम घातक हो सकता है। अतः आवश्यकता है कि सरकार को सबसे अधिक ध्यान इन निर्धनतम व गरीब लोगों की समस्याओं के हल करने पर देना चाहिये, परन्तु यह तो तभी होगा कि जब अन्य सरकारी कार्यों से धन बचेगा। आज साधनों के देशवासियों के लिए उपयोग व उनके वितरण में सन्तुलन बिगड़ा हुआ है। सन्तुलन ठीक होगा तभी गरीबों के लिए कुछ किया जा सकता है। देश के सारे साधन प्रायः शहरी जनता के उत्थान, उन्नति व विकास में लगते प्रतीत होते हैं। आज स्मार्ट सिटी बनाये जाने का तो शोर सभी दिशाओं में सुनाई दे रहा है परन्तु निर्धनतम व्यक्ति की भूख दूर करने व उसकी न्यूनतम आवश्यकताओं रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, चिकित्सा व रोजगार पर शायद कम ही ध्यान दिया जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि अतीत में हमारे निर्धन व सामाजिक दृष्टि से कमजोर लोगों को जो मुख्य धारा से दूर किया गया है, उसकी पुनरावृत्ति न हो। यह काम सरकार के करने का है परन्तु इसके लिए आर्य समाज जैसे सामाजिक संगठनों की भूमिका भी है। कुछ सामाजिक संगठन कार्य कर भी रहे हैं। जो कर रहे हैं वह प्रशंसा के पात्र है। अन्यों को भी उनसे प्रेरणा लेनी चाहिये। दीनबन्धुओं के लिए प्रत्येक सुधी व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ न कुछ करना चाहिये। भूखे और रोगी व्यक्ति का कोई धर्म नहीं होता, उसे तो येन-केन-प्रकारेण भोजन चाहिये जिससे उसकी जान बच सके। हम आशा करते हैं कि समाज के सभी मतों के बन्धु अपनी मान्यताओं व सिद्धान्तों से ऊपर उठकर निर्धनों के हितों का चिन्तन करेंगे और धनी व निर्धनता में जो जमीन व आसमान का अन्तर है, यदि उसे कुछ बांटा या कम किया जा सके तो यह धर्म का कार्य व सेवा होने के साथ देशसेवा होगी।

thearyasamaj.org

गाय की महिमा

शास्त्र कहता है—'**गावो विश्वस्य मातरः**' अर्थात् गऊएं सबकी माता हैं। जैसे जननी माता की सेवा और रक्षा की जाती है वैसे ही गाय की सेवा और रक्षा जरूरी है, क्योंकि गाय भी जननी माता की तरह ही हमारा पालन पोषण करती है। तभी तो यजुर्वेद के पहले मन्त्र में परमपिता परमात्मा मनुष्यों को उपदेश देता है—'**अघ्न्या:.... यजमानस्य पशून् पाहि**' अर्थात् तू इन पशुओं को कभी मत मार और सबके सुख देने वाले जनों के सम्बन्धी पशुओं की रक्षा कर, जिनसे तेरी भी पूरी रक्षा होवे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी जहाँ सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि आदि अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना करके मानव समाज का उपकार किया है वहां '**गोकरुणानिधि**' नाम का छोटा-सा ग्रन्थ लिखकर गाय की महिमा के सम्बन्ध में गागर में सागर भर दिया। गाय के सम्बन्ध में वे केवल धार्मिक एवं सांस्कृतिक चर्चा न करके वे शुद्ध आर्थिक एवं व्यावहारिक विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। एक गाय मनुष्य का कितना उपकार करती है इसका पूरा गणित समझाकर बता दिया है।

ब्रह्मा से लेकर आज तक आर्य लोग पशुओं की हिंसा में पाप और अधर्म समझते थे और अब भी समझते हैं। गाय आदि पशुओं की रक्षा से हमें दूध के साथ-साथ अन्न भी प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। गोहत्या से दुःखी होकर महर्षि दयानन्द लिखते हैं—"**हे मांसाहारियो! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं।**" महर्षि दयानन्द यह मानते थे कि जबसे भारतवर्ष विदेशियों के पादाक्रान्त हुआ है तब से गायादि पशुओं की हिंसा अधिक होने लगी और देश गरीब होता चला गया। आज यदि गाय आदि पशुओं की हिंसा बन्द हो जाए तो यह देश फिर से सुखी और समृद्ध हो सकता है।

गाय का दूध सर्वोत्तम होता है क्योंकि बलवर्धक के साथ बुद्धिवर्द्धक भी होता है। गाय का दूध भैंस आदि के दूध से अधिक गुणकारी होता है, उसमें सात्त्विकता होती है। गाय के घी, दूध के सेवन से आलस्य प्रमाद नहीं बढ़ता अपितु स्फूर्ति बनी रहती है। गाय के घी दूध का रंग पीला होता है, इसमें स्वर्ण होता है जो आरोग्य वर्धक है।

आयुर्वेद की दृष्टि से गाय का घी, दही, गोमूत्र, और गोबर सभी बहुत उपयोगी होते हैं। इन पांचों से बना हुआ पञ्चगव्य घृत पेट के विकारों के लिए रामबाण बताया गया है। गोमूत्र और गोबर से चर्मरोग भी दूर होते हैं। गाय के घी, दूध के सेवन से तथा गाय के शरीर पर हाथ फेरने से भी आंखों की ज्योति बढ़ती है।

यद्यपि आज वैज्ञानिक युग में ट्रैक्टर से खेती होती है और रासायनिक खाद का प्रयोग किया जाता है, जिससे भूमि की असरता बढ़ती जा रही है। बैलों की खेती सस्ती होती और गोबर के खाद से भूमि उपजाऊ बनी रहती थी। आज भी गाय की रक्षा करके उसका पालन करके तथा बैलों से खेती करके हम अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं। अधिक जमीन वाले किसान भले ही ट्रैक्टर आदि मशीनों का उपयोग भी करें परन्तु छोटे किसानों के लिए बैल अधिक उपयोगी हैं।

सरकार के द्वारा भी बैलों से खेती करने वाले किसानों को प्रोत्साहन देना चाहिए तथा गो-संरक्षण के द्वारा प्रदेश को समृद्ध बनाने की ओर कदम बढ़ाना चाहिए। ज्यों-ज्यों गोवंश घटता गया अस्पताल बढ़ते गए अब यदि गोवंश बढ़ जायेगा तो अस्पतालों की वृद्धि स्वयं रुक जायेगी। इस गाय के महिमा के रहस्य को समझना होगा तभी राष्ट्र की बौद्धिक, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति सम्भव है।

—डॉ० जगदेव विद्यालंकार पूर्व प्राचार्य, तिलक नगर, रोहतक

विशेष सूचना

आपका शुल्क समाप्त हो गया है।

आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक के सदस्यों से आग्रह है कि जिस माह आपका शुल्क समाप्त हो, कृपया उसी माह में अपना नवीन पंजीकरण शुल्क भेज दें ताकि आपकी सदस्यता समाप्त न हो और आपको आर्य प्रतिनिधि साप्ताहिक पत्रिका लगातार मिलती रहे। पत्रिका का वार्षिक शुल्क 150/- रु० व आजीवन शुल्क 1500/- रु० मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा सम्पादक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक के पते पर भेजें। -संपादक

गुरुकुल में समावर्तन संस्कार पर दिया आशीर्वाद

कुरुक्षेत्र, 20 फरवरी, 2015 गुरुकुल कुरुक्षेत्र के सभागार में शुक्रवार को द्वादश कक्षा की विदाई पर समावर्तन संस्कार समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर गुरुकुल के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने कहा कि परिश्रमी व श्रद्धावान विद्यार्थियों को ही ज्ञान की प्राप्ति होती है। जिन विद्यार्थियों के हृदय में अपने गुरु के प्रति सम्मान-भावना होती है, वही सर्वोच्च शिखर पर पहुँचते हैं। उन्होंने कहा कि विनयशील छात्र सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ जाते हैं, जबकि धमण्डी कुढ़ते रहते हैं। आदर्श विद्यार्थी वही है, जो अपनी बुद्धि व विद्या का उपयोग समाजोत्थान के लिए करते हैं। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी का चरित्र एक ऐसी शक्ति है, जो सब शक्तियों को परास्त कर सकती है, जिसके सामने सभी घुटने टेकते हैं। संस्कार हमारे जीवन का गहना है। इस अवसर पर द्वादश कक्षा के सभी छात्रों ने संस्कार व जीवन मूल्यों का जीवन में आत्मसात् करने का संकल्प किया।

समारोह से पूर्व गुरुकुल के आचार्यों तथा द्वादश व एकादश कक्षा के विद्यार्थियों ने सामूहिक रूप से वैदिक मंत्रोच्चारण द्वारा हवन किया। उसके उपरान्त सभी छात्रों के करों पर मौली बांधकर अक्षत तिलक लगाया तथा माल्यार्पण करके उन पर पुष्प वर्षा कर सभी आचार्यों ने उन्हें उज्ज्वल भविष्य व सफलता हेतु आशीर्वाद दिया। हवन से सुवासित वातावरण ने गुरु-शिष्य संबंधों को और भी प्रगाढ बना दिया।

गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान कुलवन्त सिंह सैनी, उप-प्राचार्य शमशेर सिंह व प्रशासक कंवरजीत आर्य ने समारोह में अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि जिस प्रकार पुष्प अपनी सुगंध बिना किसी भेद-भाव के सभी को प्रदान करते हैं, उसी प्रकार गुरुकुल में शिक्षित विद्यार्थी समाज में अपनी वैदिक संस्कृति के ज्ञान की सुगंध को बिना भेदभाव के फैलाते रहेंगे तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में बिताये हर पल को सदैव याद रखेंगे।

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ऋषिदेव प्रभाकर ने मनवाया अपनी प्रतिभा का लोहा

कुरुक्षेत्र 20 फरवरी, 2015 राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा (एन.टी.एस.ई.) में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ऋषिदेव प्रभाकर ने राज्य स्तर पर परीक्षा उत्तीर्ण कर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया। यह जानकारी गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य ने दी। उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा भारत में राष्ट्रीय स्तर की छात्रवृत्ति योजना है, जिसमें उच्च बौद्धिक एवं शैक्षिक क्षमता वाले छात्रों की पहचान की जाती है। इसके लिए केवल वे छात्र ही परीक्षा में बैठ सकते हैं, जो दसवीं कक्षा में पढ़ रहे हो। यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद द्वारा संचालित है। प्राचार्य ने बताया कि इस छात्र ने दिसम्बर माह में होमी भाभा केन्द्र (एचबीएसई) मुंबई द्वारा राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा को उत्तीर्ण कर न केवल गुरुकुल कुरुक्षेत्र, जिला व राज्य का नाम रोशन किया इस प्रकार की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाला कुरुक्षेत्र जिले का एक मात्र पहला विद्यार्थी है। इस शानदार उपलब्धि के लिए गुरुकुल प्रबंध समिति के प्रधान कुलवंत सिंह सैनी व प्राचार्य डॉ. देवव्रत आचार्य, प्रशासक कंवरजीत आर्य व उपप्राचार्य शमशेर सिंह ने परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी व उसकी तैयारी करवाने वाले विज्ञान अध्यापक धर्मबीर सिंह को बधाई व शुभकामनाएँ दीं तथा भविष्य में और अधिक कीर्तिमान् स्थापित करने हेतु आशीर्वाद दिया।

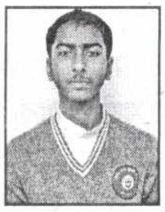

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।